IJAER/January-February- 2020/Volume-8/Issue-4/Article No-1/ 1-6 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्रओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के सम्बन्ध में अध्ययन

ज्योति
शोधार्थी
सिंघानिया विश्वविद्यालय,
झुंनझुंनु,राजस्थान

डॉ. शिवकान्त शर्मा
शोध निर्देशक
सिंघानिया विश्वविद्यालय,
झुंनझुंनु,राजस्थान

साराश
प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार के अनुसंधान की सर्वेक्षणात्मक विधि द्वारा किया गया था जिसकी समष्टि गाजियाबाद जनपद से कक्षा 9 के विद्यार्थी थे। विद्यार्थियों को लिंग के आधार पर आधा–आधा रखते हुये 600 विद्यार्थियों को याद्च्छिक रुप से चयनित करके किया गया था। आँकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण टी०आर० शर्मा द्वारा निर्मित 'एकेडमिक एचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट' का प्रयोग किया गया। समायोजन के अध्ययन हेतु एके०पी० सिन्हा एवं आर०पी० सिंह द्वारा निर्मित 'एडजस्टमेंट इन्वेंटरी फॉर स्कल स्टूडेंट' का प्रयोग किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के रूप में विद्यार्थियों के कक्षा 9 के प्राप्ताकों को लिया गया। संग्रहीत प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु कार्ल पीयरसन द्वारा प्रतिपादित 'गुणनफल आघूर्ण विधि' से चरों के मध्य सह–सम्बन्ध की गणना की गयी।

मुख्य शब्द : याद्च्छिक, समष्टि, न्यादर्श, शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन तथा गाजियाबाद जनपद के विद्यालय

प्रस्तावना

मनुष्य को वातावरण में सामन्जस्यपूर्वक समायोजन करने, विकास करने, सम्मानपूर्वक जीविकोपार्जन करने तथा जीवन की सुरक्षा एवं संरक्षा करने के लिए भोजन, वस्त्र एवं आवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करना आवश्यक है। भोजन, वस्त्र एवं आवास से मनुष्य को शारीरिक सुरक्षा एवं विकास तो संभव है परन्तु मनुष्य के समुचित जीवन संचालन में शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं नैतिक विकास आवश्यक है जो केवल शिक्षा के माध्यम से सम्भव है। डा० एस० राधाकृष्णन ने शिक्षा के महत्त्व को स्पष्ट करते हए कहा था कि "शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं है, न यह विचारों को समर्थन स्थली है और न ही नागरिकता की पाठशाला है। यह आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश की दीक्षा है, सत्य की खोज में लगी मानव आत्मा का प्रशिक्षण है।'' इस प्रकार शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का आधार है। निश्चित रूप से शिक्षा को जीवन के पुराने प्रतिमानों को समय की नई मांगों के अनुकूल बनाने या सामन्जस्य बैठाने के रूप में देखा जा सकता है। समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और कुरुतियों को शिक्षा के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है तथा समाज में नव चेतना का संचार कर विकास के मानवीय मूल्यों को स्थापित किया जा सकता है।

इसलिए शिक्षा को राष्ट्र की प्राण वायु कहा गया है। यही शिक्षा समाज की है उसकी ऊर्जा है। इसी आधार पर राष्ट्र का भविष्य उसके द्वारा प्राप्त गए शैक्षिक स्तर पर निर्भर करता है। शैक्षिक स्तर का सम्बन्ध इससे है कि विद्यालयों में क्या और कैसे पढ़ाया जा रहा है। हमारी वर्तमान पाठ्यचर्चा में बहुत सी कमियाँ हैं इसलिए आज भी विद्यालयी शिक्षा में 'अपव्यय' और अवरोधन' की समस्या व्याप्त है। इस समस्या के प्रति कई कारण जिम्मेदार हैं, जैसे – पाठ्यचर्चा का अरुचिकर व एकमार्गीय होना, पाठ्यचर्चा का पूर्णतः सैद्धान्तिक होना एवं करके सीखने हेतु गतिविधिया का अल्प होना आदि कारण मुख्य हैं। इसके साथ ही विद्यालयों में शिक्षकों का अभाव तथा शिक्षा में प्रेरणा का अभाव है। इसलिए विद्यालयी स्तर पर अधिकांश विद्यार्थियों को असफलता प्राप्त होती है तथा उनकी शैक्षिक स्थिति भी निम्न स्तर की होती है। अधिकांश विद्याथी विद्यालयी स्तर पर समायोजन नहीं कर पाते हैं, परिणामस्वरूप विद्यालयी स्तर पर शैक्षिक विफलता प्राप्त हो रही है। यह प्रश्न स्पष्ट रूप से अभिभावकों, शिक्षकों तथा राष्ट्रीय नियोजनकर्ताओं को आघात पहुंचा रहा है कि योग्य तथा क्षमतावान विद्यार्थी भी परीक्षाओं में अपने

शैक्षिक प्रयासों में क्यों असफल हो जाते हैं? शैक्षिक विफलता की अपेक्षा निम्न शैक्षिक उपलब्धि ने एक विकट समस्या उत्पन्न कर रखी है, जिससे मानव संसाधनों के अपव्यय के परिमाण का ज्ञान होता है।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि और विफलता का जटिल घटनाक्रम भारत जैसे विकासशील देशों के साथ ही सम्पूर्ण विश्व के शिक्षाविदों, शिक्षकों, निर्देशन प्रदाताओं एवं परामर्शदाताओं तथा शैक्षिक नियोजनकर्ताओं के लिए गम्भीर चिन्ता का कारण बना हुआ है। भारत में शिक्षा प्रक्रिया के निकटवर्ती अध्ययन एवं विश्लेषण से प्रदर्शित होता है कि शिक्षा में 'अपव्यय' तथा 'अवरोधन' की समस्या प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक आदि सभी स्तरों पर स्थायी रूप से विद्यमान है। व्यापक स्तर पर करायी जाने कक्षा 9 की सार्वजनिक परीक्षा में अधिकांश विद्यार्थियों को विफलता प्राप्त होती है अथवा उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती है, जिससे ज्ञात होता है कि इस स्तर पर शिक्षा निम्न शैक्षिक उपलब्धि तथा विफलता की समस्याओं से जकड़ी हुई है। अतः निम्न शैक्षिक उपलब्धि तथा असफलता की जांच पड़ताल करना अनिवार्य हो जाता है।

सन्दर्भ साहित्य की समीक्षा

साहित्य की समीक्षा में विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्रमुख अध्ययन इस प्रकार हैं –

विल्सन,एफ०एच०(1976) के द्वारा जूनियर हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया तथा उन्होंने पाया कि विद्यार्थियों के अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं उनकी उच्च शैक्षिक उपलब्धि उनके माता–पिता की उनके शैक्षिक मामलों या कार्यों में रूचि से जुडी हुई है। गरीगोरोय, एस०एम० (1984) के द्वारा 6 और 7 वर्ष के बालकों पर उनके समायोजन के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया। उनके द्वारा किये गये अध्ययन में माता–पिता की विशेषताओं तथा व्यवहार का प्रभाव बालकों के समायोजन पर पाया गया।

सक्सेना, वन्दना (1988) के द्वारा हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर उनके समायोजन, अभिप्रेरणा, उत्तेजना तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन किया गया। विभिन्न प्रकार के पारिवारिक सम्बन्ध रखने वाले विद्यार्थियों के समायोजन, अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

गर्ग, चित्रा (1992) के द्वारा हाईस्कूल के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक, आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा समायोजन का अध्ययन किया गया। उनके द्वारा किए गए अध्ययन में पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, बद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन के मध्य सम्बन्ध को व्यक्त किया गया।

अग्रवाल, रेखा एवं कपूर माला (1998) के द्वारा प्राथमिक स्तर पर बालकों की शैक्षिक क्रियाओं में माता–पिता की सहभागिता का अध्ययन किया गया तथा उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि माता–पिता द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पथ प्रदर्शन बालकों के अधिक अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि में योगदान करता है।

अग्रवाल, कुसुम (1999) के द्वारा शैक्षिक रूप से असफल या अनुत्तीर्ण किशोरों पर अध्ययन किया गया। अध्ययन में पाया गया कि असफल एवं उपेक्षित विद्यार्थियों की तुलना में माता–पिता का सहयोग प्राप्त करने वाले सफल विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च था। इसके अनुसार अभिभाकों का व्यवहार विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

कमार, सुभाष (2003) के द्वारा जूनियर हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर अध्ययन गया। अध्ययन में पाया गया कि माता–पिता की विद्यार्थियों की शैक्षिक याओं में सहभागिता का प्रभाव विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

ज्ञानानी एवं देवगन (2003) ने हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर माता–पिता द्वारा दिए गए प्रोत्साहन का अध्यन किया जिसमें विद्यार्थियों को मिलने वाली अभिप्रेरणा तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकों द्वारा दिये जाने वाले प्रोत्साहन अथवा अभिप्रेरणा का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

त्रिपाठी कुमुद (2004) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पर अध्ययन में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग, परिवेश व उपलब्धि अंतःक्रियात्मक, तुलनात्मक उद्देश्य पर

कार्य किया। इसमें पाया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उपलब्धि प्रेरणा का अधिक प्रभाव पड़ता है, जबकि लिंग व परिवेश का प्रभाव नहीं पड़ता है।

विद्या प्रतिभा (2006) ने बालक–बालिकाओं के विद्यालयी समायोजन के अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों में तनाव का 40 प्रतिशत कारण विद्यालय है। बालिकाएँ भारतीय परिप्रेक्ष्य में में संकीर्ण होती हैं इसलिए वे गुरुजनों एवं सहपाठियों से तुरन्त घुल–मिल नहीं पाती हैं। साथ ही पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भी कम ही भाग ले पाते ह जबकि बालकों के साथ ऐसा नहीं है। विद्यालयी गतिविधियों में बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं।

पंवार एवं उनियाल (2008) ने उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि बालक–बालिकाओं के पारिवारिक, सामाजिक, स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि विद्यालयी समायोजन में सार्थक अन्तर है।

अध्ययन का औचित्य

अभिप्रेरणा, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित प्रमुख अध्ययन इस प्रकार हैं–विल्सन एफ.एच. (1976) ने जूनियर हाईस्कूल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा गरीगारोय एस.एम. (1984) ने प्राथमिक स्तर पर बालकों के योजन पर अध्ययन किया। हाईस्कूल स्तर पर सक्सेना वंदना (1988) ने योजन, उत्तेजना तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक सम्बन्धों पर अध्ययन किया तथा गर्ग चित्रा (1992) ने पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं बद्धि एवं समायोजन के मध्य सम्बन्ध पर अध्ययन किया।

अग्रवाल कुसुम (1999) ने असफल किशोरों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन किया। कुमार सुभाष (2003), ज्ञानानी एवं देवगन (2003), विद्या प्रतिभा (2006), तथा पंवार एवं उनियाल (2008) आदि ने प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर बालक–बालिकाओं, असफल व उपेक्षित बालकों का परिवार में समायोजन, जूनियर हाईस्कूल पर माता–पिता द्वारा दी गई अभिप्रेरणा का उपलब्धि पर प्रभाव एवं विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों के समायोजन पर अध्ययन किया है। इस आधार पर निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि अब तक जा अध्ययन हुए प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, जूनियर हाईस्कूल व हाईस्कूल स्तर पर हुए हैं लेकिन अभी तक माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक अभिप्रेरणा, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन नहीं हुआ इसलिए प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

अध्ययन का शीर्षक

'' माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्रओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के सम्बन्ध में अध्ययन''

उद्देश्य

1– माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
2– माध्यमिक विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

3– माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

4–माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्रओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा उनके समायोजन के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2–माध्यमिक विद्यार्थियों माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्रओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, उत्तर प्रदेश के माध्यमिक स्तर कक्षा 9 के 60 विद्यार्थियों को लिया गया। प्रतिदर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन के आधार पर किया गया।

उपकरण

शैक्षिक अभिप्रेरणा के अध्ययन हेतु टी०आर० शर्मा द्वारा निर्मित 'एकेडमिक एचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट' का प्रयोग किया गया। समायोजन के अध्ययन हेतु एके०पी० सिन्हा एवं आर०पी० सिंह द्वारा निर्मित 'एडजस्टमेंट इन्वेंटरी फॉर स्कल स्टूडेंट' का प्रयोग किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के रूप में विद्यार्थियों के कक्षा 9 के प्राप्ताकों को लिया गया।

प्रदत्त विश्लेषण

संग्रहीत प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु कार्ल पीयरसन द्वारा प्रतिपादित 'गुणनफल आघूर्ण विधि' से चरों के मध्य सह–सम्बन्ध की गणना की गयी।

परिणाम एवं विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्रओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन''विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध ज्ञात करना था। अध्ययन की सुविधा के लिए शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलांकों के आधार पर विद्यार्थियों को (i) निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह तथा (ii) उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह में रखा गया।

तालिका 1.1

निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा (X) एवं समायोजन (ल) के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक की विश्लेषण तालिका

फलांकों का योग		मध्यमान		वर्गों का योग		गुणनफल का योग	सह–समबन्ध गुणांक
$\sum X$	$\sum Y$	(Mx)	(My)	$(\sum X^2)$	$(\sum Y^2)$	$(\sum xy)$	(r)
814.00	401.00	27.13	13.36	177.23	290.68	–174.45	–0.76

तालिका 1.1 से ज्ञात होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलांकों तथा समायोजन के फलांकों के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक (त) का मान –0.76 है। तालिका 1.1 शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं समायोजन के मध्य उच्च सह–सम्बन्ध को प्रदर्शित करती है।

तालिका 1.2

उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा (x) एवं समायोजन (y) के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक की विश्लेषण तालिका

फलांकों का योग		मध्यमान		वर्गों का योग		गुणनफल का योग	सह–समबन्ध गुणांक
$\sum X$	$\sum Y$	(Mx)	(My)	$(\sum X^2)$	$(\sum Y^2)$	$(\sum xy)$	(r)
991.00	231.00	33.13	06.36	89.23	280.68	–86.45	–0.66

तालिका 1.2 से ज्ञात होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलाकों तथा समायोजन के फलांकों के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक (r) का मान –0.66 है। तालिका 1.2 शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं समायोजन के मध्य सामान्य सह–सम्बन्ध को प्रदिर्शत करती है।

विवेचना

1.1 तथा 1.2 शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं समायोजन के फलाकों के मध्य उच्चतथा सामान्य ऋणात्मक सह–सम्बन्ध को प्रदर्शित करती हैं अर्थात् शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलाको में वृद्धि होती है तो समायोजन के फलाकों में कमी होती है। समायोजन अनुसूची को अंकन विधि के अनुसार फलाकों की कम मात्रा अधिक समायोजन को प्रदर्शित करती

है। अतः इसका अर्थ है कि अगर शैक्षिक अभिप्रेरणा अधिक है तो विद्यार्थी का समायोजन भी अधिक होगा और अगर शैक्षिक अभिप्रेरणा कम तो विद्यार्थी का समायोजन भी कम होगा।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा और समायोजन के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

तालिका 2.1

निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा (।) एवं शैक्षिक उपलब्धि (ल) के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक की विश्लेषण तालिका

फलांकों का योग		मध्यमान		वर्गों का योग		गुणनफल का योग	सह–समबन्ध गुणांक
$\sum X$	$\sum Y$	(Mx)	(My)	$(\sum X^2)$	$(\sum Y^2)$	$(\sum xy)$	(r)
814.00	1060.00	27.13	350.36	177.23	12545.68	1166.45	0.79

तालिका 2.1 से ज्ञात होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलाकों तथा शैक्षिक उपलब्धि के फलांकों के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक (r) का मान 0.79 है। तालिका 2.1 शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च सह सम्बन्ध को प्रदर्शित करती है।

तालिका 2.2

उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा (x) एवं शिक उपलब्धि (y) के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक की विश्लेषण तालिका

फलांकों का योग		मध्यमान		वर्गों का योग		गुणनफल का योग	सह–समबन्ध गुणांक
$\sum X$	$\sum Y$	(Mx)	(My)	$(\sum X^2)$	$(\sum Y^2)$	$(\sum xy)$	(r)
992.00	12211.00	32.13	407.36	84.23	30446.68	1345.45	0.86

तालिका 2.2 से ज्ञात होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलांकों तथा शैक्षिक उपलब्धि के फलांकों के मध्य सह समबन्ध गुणांक (r) का मान 0.86 है। तालिका 2.2 शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अति उच्च सह सम्बन्ध को प्रदर्शित करती है।

विवेचना

तालिका 2.1 तथा 2.2 शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के फलांकों के मध्य उच्च तथा अति उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध को प्रदर्शित करती है, अर्थात शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलांकों में वृद्धि होती है तो शैक्षिक उपलब्धि के फलांकों में भी वद्धि होती है। अतः इसका अर्थ है कि अगर शैक्षिक अभिप्रेरणा अधिक है तो विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होगी और अगर शैक्षिक अभिप्रेरणा कम है तो विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि भी कम होगी।
इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :

उपरोक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह सम्बन्ध होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, उनके समायोजन तशा नधि को

सार्थक रूप से प्रभावित करती है। जब विद्यार्थियों की अभिप्ररणा उच्च स्तर की होती है तो उनके समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी उच्च होता है।

अध्ययन के परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों को मिलने वाली शैक्षिक अभिप्रेरणा उनके विद्यालय में अच्छे समायोजन तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सहायक होती है। अतः अध्यापकों, अभिभावकों, परामर्शदाताओं एवं निर्देशन कार्यकर्ताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं के समाधान में उनकी सहायता करें तथा विद्यार्थियों को इस प्रकार अभिप्रेरित करें कि वे विद्यालय एवं आसपास के वातावरण के साथ उपयुक्त समायोजन करते हुए उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करें। शैक्षिक अभिप्रेरणा द्वारा विद्यार्थियों की असमायोजन, असफलता और निम्न शैक्षिक उपलब्धि की समस्या को सुलझाया जा सकता है तथा शिक्षा में 'अपव्यय' एवं 'अवरोधन' की समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. बुच एम०बी० (1978–83), 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजकेशन'.एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली।
2. बच एम०बी० (1988–92), 'फिफ्थ सर्वे ऑफ रिचर्स इन एजकेशन', एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली।
3. अग्रवाल रेखा एवं कपूर माला (1998), "पेरेन्ट्स पार्टीसिपेशन इन चिल्ड्रन एकेडमिक एक्टीविटीज एट द प्राइमरी लेवल'', जनरल ऑफ इंडियन एजुकेशन, वाल्यूम–ग्गप्प्(4) 61.68.
4. अग्रवाल कुसुम (1999), ''ए स्टडी ऑफ पेरेन्टल एटीट्यूड्स एण्ड सोशियो–इकॉनामिक बैकग्राउंड ऑफ द एजुकेशनली फेल्ड एडोलसेंट्स'', इंडियन जनरल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, वाल्यूम–18(1), 17–22.
5. पंवार एस० एवं उनियाल एन०पी० (2008), ''उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के समायोजन एवं माता–पिता का उनके प्रति व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन'', प्राथमिक शिक्षक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, वर्ष 33, अंक 1, जनवरी 2008.
6. कमार सुभाष (2003), ''ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप ऑफ पेरेंट्स पार्टीसिपेशन विद स्टूडेंट्स एचीवमेंट एण्ड एडजस्टमेंट'', डिसटेंशन डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, सी०सी०एस० यूनिवर्सिटी, मेरठ।
7. त्रिपाठी कुमुद (2004), ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव : एक अध्ययन'', भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 23, अंक 1, जनवरी–जून 2004.
8. श्री विद्या प्रतिभा सी०एस० (2006), ''रोल ऑफ पेरेंट्स इन हेल्पिंग एडोलसेंट्स विद स्ट्रेस'', एक्सपैरिमेंट इन एजुकेशन, वाल्यूम ग्गप्ट, नं. 8, पृ. 165.
9. प्रकाशतीर्थ एवं सिंह संतोष कुमार (2007), ''प्राथमिक शिक्षा : बुनियादी आवश्यकता'', कुरुक्षेत्र, वर्ष 53, अंक 11, सितम्बर 2007.
10. गर्ग चित्रा (1992), "ए स्टडी ऑफ फैमिली रिलेशन, सोशियो–इकॉनामिक स्टेट्स, इंटेलीजेंस एण्ड एडजस्टमेंट ऑफ फेल्ड हाईस्कूल स्टूडेंट्स', फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, वाल्यूम–1, 728–730.